पाठ-१

आत्मा - परमात्मा

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

☎ 99260-40137

जीव के प्रकार
(योग्यता-अनुसार)

- भव्य
- अभव्य

भव्य कौन?

जिसमें सम्यग्दर्शन,सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र प्रकट करने की (मोक्ष जाने की) योग्यता हो

अभव्य कौन?

जिसमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र प्रकट करने की (मोक्ष जाने की) योग्यता न हो

कैसे जाने कि हम भव्य हैं?

- जिसने चेतन-स्वरूप आत्मा की बात प्रसन्न चित्त से सुनी वह भव्य है
- नियम से अल्प काल में मुक्त होगा

आत्मा किसे कहते हैं?

ज्ञान-स्वभावी जीव तत्त्व को ही आत्मा कहते हैं

आत्मा के भेद
(अवस्था-अपेक्षा)

बहिरात्मा

परमात्मा

अंतरात्मा

बहिरात्मा किसे कहते हैं?

- जो शरीर और आत्मा को एक मानता है

बहिरात्मा की कैसी बुद्धि होती है?

पर में.....

एकत्व
(ये मैं हूँ)

शरीर मैं हूँ

ममत्व
(ये मेरे हैं)

स्त्री, पुत्रादि, मकानादि मेरे हैं

- बहिरात्मा शरीर की उत्पत्ति में अपनी उत्पत्ति और
- शरीर के नाश में अपना नाश मानता है, तथा

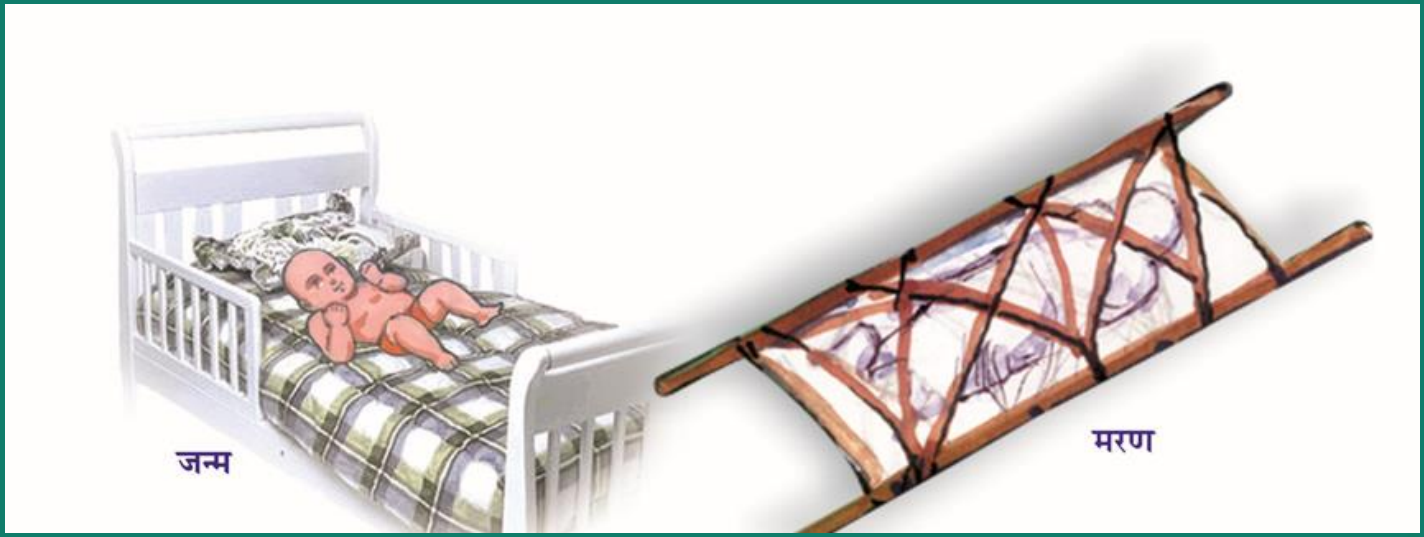

- शरीर से संबंध रखने वालों को अपना मानता है।

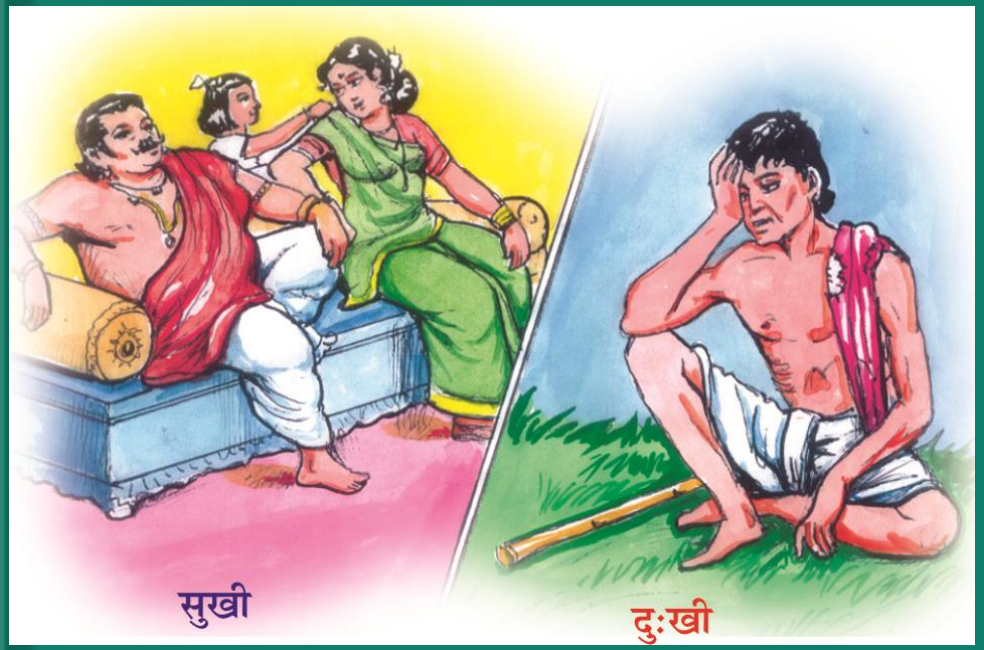

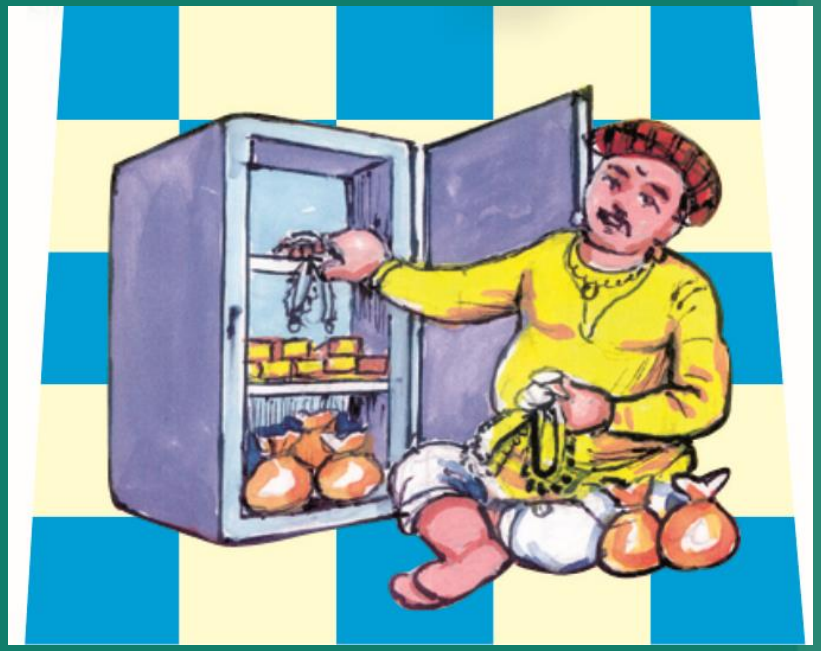

बहिरात्मा - अन्य नाम

अज्ञानी

मूढ़

मिथ्यादृष्टि

बहिरात्मा

अंतरात्मा किसे कहते हैं?

- जो आत्मा में ही अपनापन माने

अंतरात्मा क्या करता है?

- भेद-विज्ञान के बल से
- आत्मा को देहादि से भिन्न

- ज्ञान और आनंद स्वभावी

जानता | मानता | अनुभव करता है

अंतरात्मा - अन्य नाम

ज्ञानी

सम्यग्दृष्टि

अंतरात्मा

अंतरात्मा के भेद

- उत्तम
- मध्यम
- जघन्य

उत्तम अंतरात्मा किसे कहते हैं ?

- अंतरंग 14 और बहिरंग 10 प्रकार के परिग्रह से रहित
- शुद्धोपयोगी मुनिराज अर्थात्
- अरहंत बनने से तुरन्त पहले

जघन्य अंतरात्मा किसे कहते हैं ?

- अविरत सम्यग्दृष्टि
- ज्ञानी तो है, पर व्रती नहीं

मध्यम अंतरात्मा किसे कहते हैं ?

- दोनों के मध्य के :-
- शुभोपयोगी मुनिराज और
- व्रती श्रावक

परमात्मा किसे कहते हैं ?

- जो वीतरागी और सर्वज्ञ हों

परमात्मा के भेद

- सकल
- निकल

सकल परमात्मा		निकल परमात्मा
अरहंत	कल = शरीर	सिद्ध
शरीर सहित		शरीर रहित
4 घाति कर्म रहित 4 अघाति कर्म सहित		आठ कर्मों से रहित

बहिरात्मा

आत्मा

अन्तरात्मा

परमात्मा

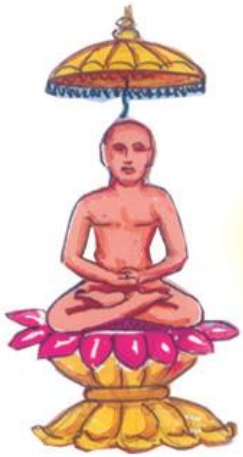

सकल

निकल

जघन्य

मध्यम

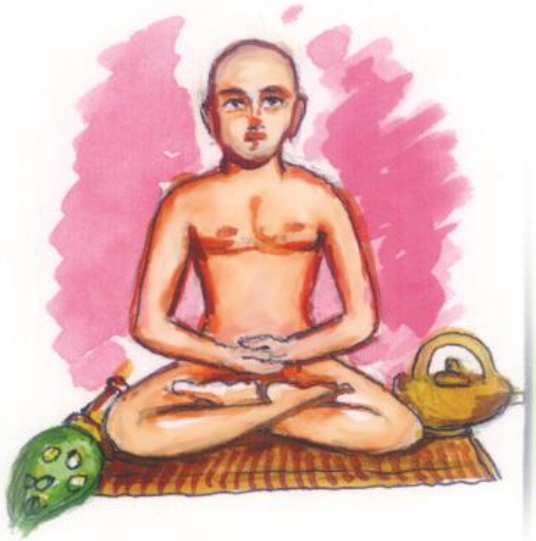

उत्तम

लाभ

परमात्मा होने से लाभ

- अनंत काल तक पूर्ण निराकुल सुख की प्राप्ति

अंतरात्मा होने से लाभ

- अंतरात्मा ही पुरुषार्थ द्वारा आगे चलकर परमात्मा बनता है

क्या बहिरात्मा होने से भी कोई लाभ है ?

- कोई लाभ नहीं
- बहिरात्मापना तो छोड़ना चाहिए
- क्योंकि, बहिरात्मापने के कारण ही
- जीव अनादि काल से संसार में
- दु:ख भोग रहा है ।

हेय-उपादेय विचार

उपादेय → ग्रहण करने योग्य

हेय → छोड़ने योग्य

बहिरात्मापना	अंतरात्मापना	परमात्मापना
संसार-मार्ग इसलिए	मोक्ष का मार्ग इसलिए	अतींद्रिय सुखमय इसलिए
सर्वथा हेय	कथंचित् उपादेय	पूर्ण उपादेय

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

हम क्या करें ?

- परमात्मा होने की भावना भाकर
- अंतरात्मा होकर
- बहिरात्मपना छोड़ें